



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

व्यक्ति को जागृत बनाना ही सहजयोग है : महंथ विचार दास

वर्धा, दि. 25 जून 2021 : जीवन की वास्तविक संरचना सहज है। हम उसे कठिन बनाते हैं। उसके साथ चलना ही सहजयोग है। सहजयोग व्यक्ति को जागृत बनाता है। मनुष्य को विवेकवान बनाना सुरत योग यानि सहजयोग का लक्ष्य है। उक्त विचार कबीर का सुरति योग (सहजयोग) विषय पर आयोजित व्याख्यान में मगहर मठ के प्रमुख महंथ विचार दास ने व्यक्त किये। वे गुरुवार (24 जून) को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ की



ओर से तरंगाधारित व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। योग सप्ताह के उपलक्ष्य में यह व्याख्यान आयोजित किया गया था। उन्होंने कबीर द्वारा प्रतिपादित सहजयोग की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि मनुष्य के भीतर आत्मस्वरूप की स्थिति है। इस स्थिति को सहज चिंतन से प्राप्त करना सहजयोग है। उन्होंने कबीर के अनेक पदों का उदाहरण देते हुए वर्तमान समय में सहजचिंतन की आवश्यकता जताई। कार्यक्रम में पटना विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. हरीश दास ने मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि कबीर ने लोगों में चेतना जगाने का और आत्मसंबल को बढ़ाने का कार्य किया। कबीर ने पाखंड और समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उनका कहना था कि सहज होना कठिन है और सहज होना एक प्रकार से द्वन्द्व से मुक्त होना है। डॉ. दास ने सहजयोग को जनसामान्य के लिए सरल और उपयोगी बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रोफेसर कृष्ण कुमार सिंह ने कबीर आँखों से देखे गये सत्य की बात करते हैं। सहजयोग को समझना हो तो राग यानि प्रेम को समझना आवश्यक है। कबीर के अनेक पदों को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि कबीर की कविता की ध्वनि आज भी कायम है और वह अनेक वर्षों तक रहेंगी।

कार्यक्रम का प्रास्ताविक एवं स्वागत वक्तव्य साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने दिया। कबीर मंगलाचरण ताना-बाना ग्रुप, मूलगादी सिद्धपीठ, कबीर चौरा मठ, वाराणसी के देवेन्द्र दास देव, कृष्णा और गौरव ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. बीर पाल सिंह यादव ने किया तथा एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. उमेश कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में सहभागी हुए। योग सप्ताह के उपलक्ष्य में शनिवार 26 जून को प्रदर्शनकारी कला विभाग एवं मराठी विभाग की ओर से 'नाथपंथ एवं हठयोग' विषय पर तथा रविवार 27 जून को दर्शन शास्त्र एवं संस्कृति विभाग की ओर से 'समग्रयोग' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है।